

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ़ जॉन, सत्र 14, यूहन्ना 12:1-50

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 14 है, यरूशलेम में आखिरी बार वापस, जॉन 12:1-50।

हम अभी जॉन 11 और जॉन के सुसमाचार के शानदार, चरम चमत्कार, लाजर को मृतकों में से जीवित करना देख रहे हैं।

हमें आश्चर्य नहीं है कि इससे कई दर्शकों को यीशु पर विश्वास हो गया। इस घटना के बारे में आश्चर्यजनक और निराशाजनक बात यह है कि पुनरुत्थान के कारण धार्मिक नेता यीशु को खत्म करने के लिए और अधिक दृढ़ संकल्पित हो गए। इसके जवाब में, यीशु एप्रैम के नाम से जाने जाने वाले एक अज्ञात स्थान पर चले गए, जैसा कि उन्होंने जॉन 11 से पहले किया था, कुछ समय के लिए जॉर्डन के पार बेथनी में चले गए।

अपनी निजी सुरक्षा बनाए रखने के लिए यीशु के लिए कुछ समय के लिए यरूशलेम से दूर जाना आवश्यक होता जा रहा है। इसलिए जैसे ही जॉन 11 समाप्त होता है, यीशु एप्रैम चला गया है, और यरूशलेम में लोगों को फसह के निकट आते ही सस्पेंस की स्थिति में छोड़ दिया है। वे यह समझने की कोशिश कर रहे हैं कि यीशु के साथ क्या हुआ है।

वे सोच रहे हैं कि क्या वह उत्सव में है भी। अध्याय 11, श्लोक 56, उनकी अंतिम बैठक के आधार पर, परिषद ने निर्णय लिया है कि उन्होंने यह संदेश प्रसारित कर दिया है कि जो लोग यीशु को देखते हैं उन्हें इसकी सूचना देनी चाहिए ताकि उन्हें गिरफ्तार किया जा सके। तो, हम अध्याय 12 पर आते हैं और यीशु बेथानी, लाजर और मरियम मार्था के घर लौट आते हैं, और फिर शहर में प्रवेश करते हैं।

यहां जॉन के लिए भी सिनॉटिक परंपरा चित्र में वापस आने लगती है, क्योंकि हमारे पास वह है जिसे आमतौर पर विजयी प्रविष्टि कहा जाता है। तो जैसा कि हमारी प्रथा है, हम पहले अध्याय के कथा प्रवाह को देखते हैं, और फिर हम वापस आएं और अध्याय में कुछ मुद्दों का पता लगाएं। तो, यीशु अब एप्रैम से बेथनी में लौट आए हैं, जो जैतून पर्वत के ठीक पूर्व में है, और लाजर के साथ रात्रिभोज में मैरी द्वारा हमारा अभिषेक किया गया है।

यहां से, लाजर यीशु के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ा रहेगा, इतना अधिक कि यहूदी नेताओं को न केवल यीशु को मारने का संकल्प लेना होगा, बल्कि लाजर को भी मारने का संकल्प लेना होगा क्योंकि लाजर यीशु की शक्ति और शक्ति के प्रदर्शन की तरह है। वे संकेत जो उसने किए हैं और उसके संदेश की वास्तविकता और पृथ्वी पर पिता के एजेंट के रूप में उसकी शक्ति। इसलिए, यदि हम यीशु को खत्म करने जा रहे हैं, तो हमें लाजर को खत्म करना होगा, यह लगभग एक गैंगस्टर फिल्म की तरह है जहां आपको दुर्भाग्य से खुद को मुसीबत में पड़ने से बचाने के लिए

सभी गवाहों को मारना पड़ता है। तो, यीशु बड़े धूमधाम से यरूशलेम में प्रवेश करते हैं, और यहां हम विजयी प्रवेश की पर्यायवाची परंपरा को वापस लेते हैं, और हमारे पास एक घटना है जहां कुछ लोगों की पहचान ग्रीक के रूप में की गई है, हम बाद में इस बारे में थोड़ा और बात करेंगे कि ये लोग कौन थे और वे सुसमाचार में क्या दर्शा सकते हैं।

यह अध्याय का थोड़ा पेचीदा हिस्सा है। तो, ये लोग जो यूनानी हैं, यीशु को देखना चाहते हैं। यह स्पष्ट नहीं है कि उन्होंने वास्तव में उसे देखा था या नहीं।

मुझे लगता है कि उन्होंने ऐसा किया होगा, लेकिन पाठ में यह स्पष्ट रूप से नहीं बताया गया है। तब जब अध्याय में मेरे लिए शायद जॉन के सुसमाचार का सबसे दुखद हिस्सा है, जहां लेखक पीछे देखता है और यीशु ने जो कुछ कहा है और जो कुछ भी यीशु ने किया है उस पर विचार करता है और इस तथ्य पर विचार करता है कि कोई उत्साहजनक सकारात्मक प्रतिक्रिया नहीं मिली है उसे। और इसलिए, एक कविता जो वास्तव में है, मुझे लगता है कि कई मायनों में, जॉन के सुसमाचार में सबसे दुखद कविता है, लगभग एक प्रकार की वादी विलाप की तरह।

12:37 परन्तु यीशु ने उनके साम्हने इतने चिन्ह दिखाए, तौभी उन्होंने उस पर विश्वास न किया। यह ऐसा है, आप क्या करने जा रहे हैं? उसने वह सब कुछ किया है जो वह कर सकता है। उसने इसे समय-समय पर, साल-दर-साल, त्यौहार के बाद त्यौहार के बाद किया है, फिर भी उसने जो कुछ भी किया है, उसके बावजूद, मुख्य रूप से लाजर के पुनरुत्थान में समाप्त होने वाले सात संकेत, फिर भी उन्होंने उस पर विश्वास नहीं किया।

तो हम हार कर उस सोच से दूर आते हैं। हालाँकि, तुरंत ही यशायाह की भविष्यवाणी सामने आ जाती है। और इसलिए, पूरी चीज़ का श्रेय ईश्वर की कृपा को दिया जाता है।

और भगवान फिर भी इससे आश्चर्यचकित नहीं हैं। और इसलिए, सब कुछ भगवान के हाथ में है। तो, हम तब से यीशु के मंत्रालय के अंतिम सारांश और उसके प्रति एक धार्मिक दृष्टिकोण से आगे बढ़ते हैं, और यह स्वीकार करते हैं कि कई लोगों ने विश्वास किया था, हालांकि वे अपने विश्वास के साथ सार्वजनिक नहीं होंगे।

फिर अध्याय 12 से जॉन के सुसमाचार का अंतिम भाग, छंद 44 से 50, जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यह लगभग उन सभी चीजों का एक संक्षिप्त सारांश जैसा लगता है जो यीशु ने अब तक सिखाई है। तो, आइए इसे एक साथ पढ़ें और अब तक जो कुछ भी हुआ है उसे याद रखें और इसे जॉन के सुसमाचार में यीशु के सार्वजनिक मंत्रालय के सारांश के रूप में उपयोग करें। जो कोई मुझ पर विश्वास करता है, श्लोक 44 की शुरुआत में, मुझे कहना चाहिए, 47 नहीं, जो कोई मुझ पर विश्वास करता है वह केवल मुझ पर विश्वास नहीं करता है, बल्कि उस पर विश्वास करता है जिसने मुझे भेजा है।

जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। मैं जगत में ज्योति बन कर आया हूँ, ताकि जो मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे। यदि कोई मेरी बातें सुनता है, परन्तु उन

पर नहीं चलता, तो मैं उस पर दोष नहीं लगाता, क्योंकि मैं जगत में जगत को दोषी ठहराने के लिये नहीं, परन्तु जगत का उद्धार करने के लिये आया हूँ।

जो मुझे अस्वीकार करता है, और मेरी बातें ग्रहण नहीं करता, उसके लिये भी एक न्यायाधीश है। जो शब्द मैंने कहे हैं वे ही अंतिम दिन उनकी निंदा करेंगे। क्योंकि मैं ने आप से न कहा, परन्तु पिता ने, जिस ने मुझे भेजा है, आज्ञा दी है, कि जो कुछ मैं ने कहा है वही कहूँ।

मैं जानता हूँ कि उसकी आज्ञा अनन्त जीवन की ओर ले जाती है। इसलिए, मैं जो कुछ भी कहता हूँ वह वही है जो पिता ने मुझे कहने के लिए कहा है।" तो, यह जॉन की कथा का प्रवाह श्लोक 44 से 50 तक इन शब्दों में समाप्त होता है, जो कम से कम मेरे दिमाग में, यीशु को दोहराने जैसा है इस सुसमाचार में सब कुछ एक तरह से संक्षेप में कहा जा रहा है। तो अब हम आगे बढ़ते हैं और परिच्छेद को फिर से अधिक विषयगत रूप से देखते हैं और ध्यान देते हैं कि वास्तव में क्या हो रहा है क्योंकि ये चीजें जॉन में विकसित होती हैं।

इसलिए दुर्भाग्य से, हम पहले भी कहते रहे हैं कि उग्र संघर्ष चरम पर पहुंच रहा है, और मुझे लगता है कि यह अध्याय दिखाता है कि यह अपनी अंतिम स्थिति तक पहुंच गया है। इसलिए हमें वापस जाने और इन सभी ग्रंथों को देखने में समय नहीं लगेगा जिन्हें हम यहां स्लाइड पर सूचीबद्ध कर रहे हैं, लेकिन जैसा कि आप जानते हैं कि यीशु की यरूशलेम की पहली यात्रा पर वापस जाएं जब उन्होंने मंदिर को साफ किया था और उनके अधिकार को वहां चुनौती दी गई थी, आने वाले अध्यायों में बार-बार हम पाते हैं कि यीशु के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया बढ़ रही है, और भले ही हमें पूरे सुसमाचार में याद दिलाया गया है कि अधिक से अधिक लोग उस पर विश्वास करते हैं, धारणा बिल्कुल स्पष्ट है कि अधिक से अधिक लोग उस पर विश्वास नहीं करते हैं उस पर विश्वास करना, और चीजों को चलाने वाले अधिक महत्वपूर्ण लोग हैं जो उस पर विश्वास नहीं करते हैं। कम से कम उनमें से अधिकांश ऐसा नहीं करते क्योंकि हमारे पास निकोडेमस और अरिमथिया के जोसेफ हैं जो स्पष्ट रूप से इस समय तक कम से कम हल्के ढंग से यीशु के पक्ष में थे।

तो, सुलगाता हुआ संघर्ष सिर पर आ रहा है और लाजर का उत्थान, जिसके बारे में आप सोचेंगे कि चीजों को बेहतर बनाना चाहिए, एक अर्थ में केवल चीजों को बदतर बनाता है क्योंकि इससे लोगों का एक और समूह यीशु में विश्वास करने लगता है, लेकिन यह यह उन लोगों के संकल्प और क्रोध को भी बढ़ाता है जो यीशु पर विश्वास नहीं करते हैं। तो 11:45 के अनुसार आपके पास अधिक विश्वासी हैं, लेकिन आपके पास उन लोगों की ओर से अधिक प्रेरणा है जो नहीं चाहते कि यीशु उनसे छुटकारा पाएं, क्योंकि लाजर के पुनरुत्थान को एक ऐसी चीज़ के रूप में चित्रित किया गया है जिसने यीशु के सभी अनुयायियों को उत्साहित किया है और भी, और वहाँ पहले से ही बहुत से लोग फसह की दावत के लिए आ रहे हैं, और इसलिए वे यह खबर सुन रहे हैं कि शहर में एक भविष्यवक्ता है जिसने अभी-अभी एक व्यक्ति को मृतकों में से जीवित किया है। वे उस व्यक्ति को देख सकते हैं जिसे मृतकों में से उठाया गया था, और इसलिए अब फरीसी संकट में हैं क्योंकि उन्हें न केवल यीशु को खत्म करना है बल्कि उसे भी खत्म करना है जिसे यीशु ने मृतकों में से उठाया था।

इसलिए, जॉन में ग्रंथों को बार-बार देखने के बाद जहां यीशु ने कहा है, मेरा समय अभी तक नहीं आया है, गलील के काना में अध्याय 2 से शुरू होकर, अब हमारे पास अंततः इस तथ्य का संदर्भ है कि यीशु का समय आ गया है। यूहन्ना अध्याय 12, श्लोक 23, यीशु कहते हैं, वह समय आ गया है कि मनुष्य के पुत्र की सचमुच महिमा की जाए। मैं तुम से कहता हूँ, जब तक गेहूँ का दाना भूमि पर गिरकर मर नहीं जाता, तब तक वह एक ही बीज रहता है, परन्तु यदि वह मर जाता है, तो बहुत से बीज उत्पन्न करता है।

तो, यीशु अब बहुत यथार्थवादी और स्पष्ट रूप से बोल रहे हैं कि उनका समय कम है और उनकी मृत्यु काफी निकट है। इस अध्याय के बारे में एक और दिलचस्प बात यह है कि जो पाठ मैंने अभी पढ़ा, उससे पहले की घटना है। हमें यूहन्ना अध्याय 12 और श्लोक 20 में बताया गया है कि उन लोगों में से कुछ यूनानी थे जो उत्सव में पूजा करने आए थे और वे फिलिप के पास आए थे जो गलील के बेथसैदा से थे, अनुरोध के साथ, श्रीमान, हम देखना चाहेंगे यीशु।

अतः फिलिप्पुस अन्द्रियास से मिलने गया, और अन्द्रियास और फिलिप्पुस ने भी यीशु को बताया। यह थोड़ा अजीब लगता है क्योंकि इसमें कोई आगामी श्लोक नहीं है जो कहता हो, पूछताछ के जवाब में, यीशु उनसे मिलने के लिए बाहर गए और कहा, ऐसा कुछ नहीं है। तो, यह एक तरह से लटका हुआ छोड़ दिया गया है, और इसके बाद यीशु जो कहते हैं वह सीधे तौर पर इस सवाल पर बात नहीं करता है कि क्या लाल अक्षर वाले छंद, यदि आप उन्हें छंद 23 से 28 तक कहना चाहते हैं, तो क्या वह बाहर गए हैं और ये शब्द उन यूनानियों से कहे जो उसे देखना चाहते हैं, या क्या यह कुछ ऐसा है जो वह यूनानियों के अनुरोध पर अपने शिष्यों से कह रहा है।

तो, ये लोग कौन हैं? ये यूनानी कौन हैं जो फसह की पूजा करने आते हैं? वे लोग हो सकते हैं जो वहां तीर्थयात्रा पर आए हों, और वे शायद केवल जिज्ञासा चाहने वाले, पर्यटक, उस तरह की चीज हैं, मुझे लगता है। उन्होंने यरूशलेम में फसह के बारे में सुना है, शहर कितना जाम है, और कैसे, वाह, आपको इसे देखने जाना चाहिए, और शायद वे इसी तरह की जिज्ञासा से आए हैं। मुझे लगता है यह संभव है।

हालाँकि, इसकी अधिक संभावना प्रतीत होती है कि वे उत्सव में पूजा करने गए थे, और वे कुछ अर्थों में भगवान में विश्वास करने वाले के रूप में वहाँ थे। इससे यह सवाल उठेगा कि क्या वे यहूदी लोग थे जो कमोबेश डायस्पोरा में रह रहे थे और अधिक यूनानी बन गए थे और ग्रीक संस्कृति के आदी हो गए थे, जो मुख्य रूप से ग्रीक भाषा बोलते थे, जो टोरा पढ़ रहे थे ग्रीक अनुवाद, जिसे अब हम पीछे मुड़कर देखते हैं और सेप्टुआजेंट के रूप में जानते हैं, और शायद उस समय फिलिस्तीन में रहने वाले यहूदियों की तुलना में कानून की उनकी समझ थोड़ी अधिक खुली हो गई थी। शायद प्रेरितों के काम अध्याय 6 में बाद में वर्णित लोगों जैसे लोगों को प्रारंभिक चर्च में अधिक हिब्रूकृत यहूदियों के साथ समस्याएँ थीं।

तो, आपको याद होगा, वहाँ हेलेनिस्टिक यहूदियों और हिब्रास्टिक यहूदियों के बीच एक बहस, एक चर्चा, एक समस्या थी, ऐसा कहा जा सकता है, जो हेलेनिस्टिक संस्कृति के अधिक आदी हो गए थे और जो फिलिस्तीन में अधिक सख्त थे। शायद हमारे यहाँ वह है। ग्रीक में शब्दांकन थोड़ा अलग है, लेकिन मुझे लगता है कि यह संभव है।

मुझे लगता है कि शायद इसकी अधिक संभावना है कि ये लोग अन्यजाति हैं, यहूदी नहीं, बल्कि अन्यजाति हैं जो जिज्ञासा से यरूशलेम नहीं आ रहे हैं, बल्कि वे यरूशलेम इसलिए आ रहे हैं क्योंकि वे इसराइल के परमेश्वर को जान गए हैं, और वे ही हैं उस प्रकार के लोग जिनका वर्णन अधिनियम की पुस्तक में ईश्वर से डरने वालों या ईश्वर से डरने वालों के रूप में किया गया है। आप शायद उनके बारे में प्रेरितों की किताब में पहले ही पढ़ चुके होंगे। मुझे आश्चर्य होता है कि क्या ल्यूक के सुसमाचार में जिस व्यक्ति से हम मिलते हैं उसे भी ईश्वर-भयभीत के रूप में देखा जाना चाहिए, हालाँकि इस शब्द का उपयोग उसका वर्णन करने के लिए नहीं किया गया है।

ल्यूक अध्याय 7 में, वह आदमी, सूबेदार, जिसके बारे में यहूदी नेता यीशु से कहते हैं, वह हमारे राष्ट्र से प्यार करता है और उसने हमारे आराधनालय का निर्माण किया। ऐसा प्रतीत होता है कि किसी ने ऐसा केवल इसलिए किया होगा क्योंकि वे शब्द के कुछ अर्थों में इज़राइल के ईश्वर में विश्वास करने लगे थे। जैसा कि हम प्रेरितों के काम की किताब से जानते हैं, संभवतः अध्याय 13 से शुरू होता है, जहाँ पॉल पिसिदिया के अन्ताकिया में दर्शकों से बात कर रहा है, पुरुषों और भाइयों, वह कहता है, और आप में से जो भगवान से डरते हैं, जैसे ही वह उपदेश शुरू करता है अधिनियम अध्याय 13.

और जैसे ही प्रेरितों के काम अध्याय 13 में उपदेश समाप्त होता है, जैसा कि आप पहले से ही अच्छी तरह से जानते होंगे, उस सब के प्रति दर्शकों में अन्यजातियों की दिलचस्प सकारात्मक प्रतिक्रिया है। हम इसके बारे में श्लोक 42 में पढ़ते हैं और इसके बाद, पॉल और बरनबास आराधनालय से बाहर निकल रहे थे। लोगों ने उन्हें अगले सप्ताह के दिन इन चीज़ों के बारे में और बात करने के लिए आमंत्रित किया, जब मण्डली को बर्खास्त कर दिया गया, तो कई यहूदी और श्रद्धालु यहूदी धर्म में परिवर्तित हो गए।

यह वह शब्द है, एनआईवी, जिसे मैं पढ़ रहा हूँ, इसमें यहूदी धर्म में धर्मान्तरित लोग शामिल हैं जिनके बारे में मैं यहां ईश्वर-भयभीत लोगों के रूप में बात कर रहा हूँ। किसी को आश्चर्य होता है कि ईमानदारी से कहूं तो क्या यह एक अच्छा अनुवाद है, क्योंकि यहूदी धर्म में परिवर्तित होने वालों को यहूदी माना जाता। लेकिन यह पाठ इस समूह को यहूदियों से अलग कर रहा है, इसलिए यह मेरी राय है, यह अधिक संभावना है कि ये गैर-यहूदी लोग थे जो आराधनालय में जो कुछ चल रहा था उसमें रुचि रखते थे, इज़राइल के भगवान की सराहना करने लगे थे और इज़राइल के भगवान में विश्वास करते थे। बुतपरस्त देवताओं या सम्राटों की बजाय अपनी संस्कृति की पूजा करना।

तो, वे ईश्वर में विश्वास रखते थे, लेकिन संभवतः वे अभी तक यहूदी धर्म में परिवर्तित नहीं हुए थे, जिसके लिए पुरुषों के मामले में खतना की आवश्यकता होती, और इस समय पुरुषों और महिलाओं के मामले में समान रूप से बपतिस्मा की आवश्यकता होती, यहूदी आस्था में प्रवेश करने के लिए एक अनुष्ठानिक विसर्जन। मेरी राय में, ये लोग यहूदी धर्म में परिवर्तित नहीं थे, बल्कि वे इसकी अगली चीज़ थे। निश्चित रूप से अब उनकी पहचान, स्पष्ट रूप से, अशुद्ध अन्यजातियों के रूप में नहीं की गई थी।

इसलिए, ये लोग, हालांकि, हम अधिनियम 13:43 में इस शब्द का अनुवाद करना चाहते हैं, इनमें से कई लोग जिन्होंने पॉल वहां आराधनालय में बात कर रहा था, कहते हैं कि उन्होंने पॉल और बरनबास का अनुसरण किया जिन्होंने उनसे बात की और उनसे आग्रह किया कि वे इसमें बने रहें भगवान की कृपा। और यदि हम समय लेंगे, तो हमें अधिनियमों में कुछ अन्य स्थान मिलेंगे जहां एक ही प्रकार के व्यक्ति का एक से अधिक अवसरों पर उल्लेख किया गया है। उदाहरण के लिए, प्रेरितों के काम 13:48, जब अन्यजातियों ने यह सुना, तो वे आनन्दित हुए और उन्होंने प्रभु के वचन का सम्मान किया, और जो अनन्त जीवन के लिए नियुक्त किए गए थे, उन सभी ने विश्वास किया।

मैं नहीं जानता कि ये गैर-यहूदी सड़क से हटकर सिर्फ कच्चे गैर-यहूदी थे। अधिक संभावना है कि वे गैर-यहूदी थे जो इसराइल के ईश्वर में विश्वास करने लगे थे और जो पहले से ही कुछ हद तक यहूदी धर्म के आदी थे, और वे समझ गए थे कि पॉल ने क्या कहा था जब उन्होंने अधिनियम 13 में इज़राइल के इतिहास के बारे में संदेश दिया था और यीशु कैसे थे इसराइल की आशा की पूर्ति। किसी भी दर पर, ये कुछ हद तक रहस्यमय यूनानी जो यहां जॉन 12:20 में दिखाई देते हैं, संभवतः गैर-यहूदी ईश्वर-भयभीत हैं जो अपने यहूदी दोस्तों के साथ फसह में ईश्वर की पूजा करने के लिए वहां आते हैं।

सवाल यह है कि कथा में इस बिंदु पर इसे क्यों पेश किया गया है? इस बिंदु पर विशेष रूप से इसका उल्लेख करने की आवश्यकता क्यों होगी, विशेषकर तब जब हम केवल इस बात पर अड़े हुए हैं कि क्या यीशु वास्तव में विशेष रूप से वापस आए और उनसे बात की या नहीं? जैसा कि हम इस बारे में सोचते हैं, यहां कुछ विचार हैं। इस बिंदु पर, यीशु ने मूल रूप से वह सब कुछ किया है जो वह करने जा रहा है, शायद आप सब कहेंगे कि वह इज़राइल के लिए कर सकता है। इज़राइल के लिए उनका सार्वजनिक मंत्रालय पूरा हो गया है।

फिर भी वह पहले ही इस तथ्य की ओर संकेत कर चुका है कि उसकी अन्य भेड़ें भी हैं जो इस भेड़शाला की नहीं हैं, और वह उन्हें यहूदी विश्वासियों के साथ लाना चाहता है ताकि केवल एक झुंड और एक भेड़शाला हो। इसके अलावा, कैफा ने जो शब्द राजनीतिक रणनीति के रूप में बोले थे, जॉन अध्याय 11, श्लोक 52 में एक अलग, अधिक आध्यात्मिक अर्थ देखते हैं। उन्होंने भविष्यवाणी की थी कि यीशु यहूदी राष्ट्र के लिए मरेंगे, 11:51, न कि केवल उस राष्ट्र के लिए, 11:52 कहता है, परन्तु परमेश्वर के बिखरे हुए बच्चों को एक साथ लाने और उन्हें एक बनाने के लिए।

तो शायद इसी के प्रकाश में, इस बिंदु पर यहां जोर दिया गया है, क्योंकि यीशु का मंत्रालय अपने अंत के करीब है और उसने इज़राइल से पूरी तरह से बात की है। हमें ये संकेत मिले हैं कि यीशु को इज़राइल के अलावा अन्य देशों में भी रुचि है। शायद यह बस उस विषय से जुड़ा है।

तो, यदि यह मामला है, तो ये अन्यजाति यीशु की कहानी के इच्छित सार्वभौमिक दर्शकों की आशा कर रहे हैं। इसलिए, जब हम जॉन को इसके निष्कर्ष पर आते हुए देखते हैं, तो अब हम निश्चित रूप से, निश्चित रूप से अंतर्निहित रूप से जानते हैं कि हमने सिनोप्टिक परंपरा में स्पष्ट रूप से कहा है कि यीशु का संदेश सभी राष्ट्रों तक ले जाना है। जॉन के सुसमाचार में, हमने

वास्तव में इसे प्रेरितों के आदेश के रूप में स्पष्ट रूप से नहीं कहा है जैसा कि हम पर्यायवाची परंपरा में करते हैं, लेकिन शायद यह इस आशय के संकेत देने का जॉन का तरीका है।

जॉन कभी-कभी प्रतीकात्मक या मौन तरीके से बातें कहते हैं, और शायद हम यहां भी यही कर रहे हैं। किसी भी घटना में, जॉन के कई ग्रंथ हैं जिन्हें हमने यहां स्लाइड के नीचे सूचीबद्ध किया है, जो हमें दिखाते हैं कि भगवान चाहते हैं कि सुसमाचार हर किसी तक पहुंचे। आखिरकार, यीशु परमेश्वर का मेम्रा है जो संसार के पापों को हर लेता है, यहूदियों के नहीं, अध्याय 1, पद 29 में।

और यह है कि यूहन्ना 3:16 में ईश्वर दुनिया से इतना प्यार करता है, न कि केवल इब्राहीम के वंशजों से। अध्याय 4 के अनुसार, ईश्वर निश्चित रूप से सामरियों की परवाह करता है। यीशु जीवन की रोटी है, जो अध्याय 6 में दुनिया के जीवन के लिए दी गई है। यीशु 8 में इज़राइल की रोशनी नहीं है, वह वास्तव में दुनिया की रोशनी है। जॉन में विश्व शब्द एक दिलचस्प शब्द है, हमारे पास अपने वीडियो में थोड़ी देर बाद इस पर चर्चा करने का कारण होगा, लेकिन मुझे लगता है कि यह हमें दिखा रहा है कि भगवान निश्चित रूप से न केवल इज़राइल में, बल्कि पूरी मानवता में रुचि रखते हैं।

हमारे पास बाइबिल की पूर्ति के बारे में जॉन 12 में कुछ बहुत दिलचस्प बातें चल रही हैं, कम से कम वह पाठ जो विजयी प्रविष्टि में उद्धृत किया गया है, जिससे हम शायद पहले से ही सिनॉटिक परंपरा, जॉन 12, पद 13 से परिचित हैं। जैसे ही यीशु आया यरूशलेम, भीड़ ने ताड़ की शाखाएँ लीं और चिल्लाते हुए, होसन्ना से मिलने के लिए निकल पड़ीं, जिसका मुझे लगता है कि अनिवार्य रूप से मतलब है कि अब हमें बचाओ। धन्य है वह जो प्रभु के नाम पर आता है, धन्य है इस्राएल का राजा।

तो, यीशु फिर से गधे पर सवार होकर शहर में आता है, और जॉन पद 15 में इसका संदर्भ जकर्याह अध्याय 9, पद 9 से है। इसलिए, हमारे पास विजयी प्रवेश का वर्णन करने के लिए सिनॉटिक परंपरा में उद्धृत वही पाठ है। यहां 12.16 में जॉन की व्याख्यात्मक टिप्पणी में कहा गया है, पहले तो उनके शिष्यों को यह सब समझ में नहीं आया, यीशु की महिमा होने के बाद ही उन्हें एहसास हुआ कि ये बातें उनके बारे में लिखी गई थीं, और ये चीजें उनके लिए की गई थीं। तो, मुझे लगता है कि यह जो कह रहा है वह यह है कि केवल पूर्व-निरीक्षण में ही यीशु के शिष्यों ने भजन 118 और जकर्याह अध्याय 9, पद 9 के वास्तविक महत्व को समझा, क्योंकि यह यीशु के आगमन पर लागू होता था।

विजयी प्रवेश पर इस विशेष नोट के बारे में एक और दिलचस्प बात यह है कि श्लोक 17 में, यह कहा गया है कि जब उसने लाजर को कब्र से बुलाया और उसे मृतकों में से जीवित किया तो जो भीड़ उसके साथ थी, उसने इस बात को फैलाना जारी रखा। और अब लाजर यीशु के कौशल के प्रदर्शन ए की तरह है, और इसलिए वह वह है जो यीशु के लिए बहुत अधिक उत्साह पैदा कर रहा है। एक और बात जिसके बारे में हमें यहां संक्षेप में बात करने की आवश्यकता है वह यह है कि अध्याय के निष्कर्ष में, यीशु के सभी लक्षण श्लोक 37 में प्रतिबिंबित हो रहे हैं, और जिस तरह से इसके परिणामस्वरूप हर कोई विश्वास नहीं कर रहा है।

तो, तथ्य यह है कि यीशु के प्रति एक मौन प्रतिक्रिया रही है, एक विभाजित प्रतिक्रिया है, और कई लोगों ने उस पर विश्वास नहीं किया है, जॉन द्वारा इसे यशायाह के शब्दों की पूर्ति के रूप में लिया गया है। तो, हमारे पास यूहन्ना 12:38 में, यशायाह 53, श्लोक 1 का उद्धरण है, हे प्रभु, किसने हमारे संदेश पर विश्वास किया है और प्रभु का हाथ किस पर प्रकट हुआ है? फिर जॉन एक और संपादकीय टिप्पणी करता है। इस कारण वे विश्वास नहीं कर पा रहे थे।

वे विश्वास नहीं कर सके क्योंकि जैसा कि यशायाह अन्यत्र कहता है, उसने उनकी आंखें अंधी कर दीं और उनके हृदय कठोर कर दिए ताकि वे न तो अपनी आंखों से देख सकें और न ही अपने हृदय से समझ सकें और फिरें और मैं उन्हें चंगा कर दूँ। और फिर जॉन अध्याय 12, श्लोक 40 को यशायाह अध्याय 6 के श्लोक 9 से लिया गया है। दिलचस्प बात यह है कि जॉन श्लोक 41 में कहता है कि यशायाह ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसने वस्तुतः उसकी महिमा देखी थी, और एनआईवी निश्चित रूप से, मैं सही ढंग से सोचता हूँ, उसकी महिमा लेता है यीशु के संदर्भ में और अनुवाद के रूप में यशायाह ने ऐसा इसलिए कहा क्योंकि उसने यीशु की महिमा देखी और उसके बारे में बात की। बस एक पल के लिए रुकें और उसके बारे में सोचें।

जब हमारे पास अध्याय 6 में यशायाह है, तो ईश्वर को ऊंचा और ऊंचा देखकर देवदूत प्राणी कह रहे हैं कदोष, कदोष, कदोष, पवित्र, पवित्र, पवित्र प्रभु ईश्वर सर्वशक्तिमान है। जॉन के लिए यह कहना कि वे यीशु की तलाश कर रहे थे और यशायाह ने यीशु की महिमा देखी, इसका अभिन्न अंग है। यह समान है।

यह वास्तव में सिर्फ यह कहना है कि वह सेनाओं का प्रभु है जो महिमा से ऊंचा उठा हुआ है। यीशु के उच्च दृष्टिकोण के बारे में एक और स्पष्ट पाठ, जॉन के सुसमाचार में यीशु की दिव्यता है। तो वापस यीशु के प्रति मौन प्रतिक्रिया के विषय पर।

पहले पाठ में यह बताने के लिए यशायाह 53 को उद्धृत किया गया कि बहुत से लोगों ने विश्वास क्यों नहीं किया, श्लोक 39 में इसे दोहराते हुए कहा गया है कि वे यशायाह अध्याय 6, श्लोक 9 के कारण विश्वास नहीं कर सकते। फिर श्लोक 42 दूसरा तरीका अपनाता है। यह कहने के बाद कि बहुतों ने विश्वास नहीं किया क्योंकि वे विश्वास नहीं कर सकते थे, श्लोक 42 वास्तव में अच्छा कहता है, साथ ही नेताओं में से भी कई लोगों ने उस पर विश्वास किया। तो, जॉन हमें एक दिशा में ले जा रहा है और वह हमें एक अलग दिशा में ले जा रहा है।

और इसलिए, मुझे लगता है कि हम यहां उस तरह से आगे बढ़ रहे हैं जिस तरह से पाठ आगे और पीछे जाता है जो हमने अध्याय 7 की शुरुआत में पढ़ा है। यीशु के बारे में पूरी तरह से विभाजित प्रतिक्रिया थी और निश्चित रूप से कई लोगों ने इस पर विश्वास नहीं किया था उसे और शायद बहुत कम लोगों ने किया, लेकिन जिन कम लोगों ने उस पर विश्वास किया, वे महत्वहीन नहीं थे। तो, जॉन हमें यहां पद 42 में बताता है कि कई लोगों ने उस पर विश्वास किया और वह कहता है कि नेताओं के बीच भी। अब रुकें और एक पल के लिए इसके बारे में सोचें।

जिन नेताओं के बारे में हमें पता है कि यीशु में विश्वास था, उनमें से एकमात्र निकुडेमुस था। निकोडेमस ने वास्तव में उनसे अध्याय 7 के अंत में कम से कम कुछ न्यायिक उह ईमानदारी

और सत्यनिष्ठा रखने के लिए कहा जिस तरह से उन्होंने यीशु के बारे में सोचा था। और हम अध्याय 9 में पाएंगे कि निकोडेमस ने अरिमथिया के जोसेफ के साथ मिलकर, जिसकी पहचान परिषद के एक अन्य सदस्य के रूप में की है, वह और निकोडेमस यीशु के शरीर को दफनाते हैं।

हमारे पास जॉन के बारे में कोई अन्य स्पष्ट संकेत नहीं है कि इज़राइल के नेताओं में से अन्य लोग उस पर विश्वास करते थे। शायद अन्य लोग भी थे, शायद जॉन चाहता है कि हम उन दो व्यक्तियों के बारे में सोचें। तो, हमने एक बयान दिया है जिस पर कई लोगों ने विश्वास नहीं किया, वे विश्वास नहीं कर सके।

खैर, कुछ नेताओं ने भी विश्वास किया, लेकिन फिर इससे पता चलता है कि हम उनके बारे में ज्यादा क्यों नहीं जानते। मिडिलवुड पद 42, फरीसियों के कारण वे खुले तौर पर अपने विश्वास को स्वीकार नहीं कर सकते थे, इस डर से कि उन्हें आराधनालय से बाहर निकाल दिया जाएगा। उन्हें ईश्वर की प्रशंसा से अधिक मानवीय प्रशंसा प्रिय है।

यह हमें उस नोट पर ले जाता है जिसे हम जॉन में बार-बार दोहराते रहे हैं। मुझे आशा है कि यदि आपने कई अन्य वीडियो देखे हैं तो आप इससे नहीं थक रहे होंगे। हमने इस बारे में बहुत अधिक बात की है, इसका कारण यह है कि जॉन इसके बारे में बहुत बात करते हैं और सवाल उठाते हैं और इसलिए हमें इस पर विचार करने और इसे समझने की आवश्यकता बनी रहती है।

हमें यहां अध्याय 12 पद 11 में फिर से बताया गया है कि कई लोग यीशु के विजयी प्रवेश में विश्वास करते थे। लाजर के कारण भी, कई लोग अध्याय 12 श्लोक 11 के अनुसार यीशु पर विश्वास कर रहे थे, जो अपने आप में अच्छा है लेकिन नेताओं के दृष्टिकोण से यह और भी अधिक कारण था कि वे यीशु को मारना चाहते थे। इसलिए, वे यीशु को मारना चाहते थे क्योंकि उन्होंने लाजर को मृतकों में से जीवित किया था और वे लाजर को भी मारने की योजना बना रहे थे क्योंकि वह यीशु की शक्ति का एक प्रमाण था।

इसलिए, उन्हें ईश्वर की प्रशंसा से अधिक मानवीय प्रशंसा प्रिय थी। तो यहां हम फिर से अस्पष्ट आस्था के मुद्दे के साथ हैं। बहुतों ने विश्वास किया परन्तु उन्होंने सार्वजनिक रूप से यीशु को स्वीकार नहीं किया।

फिर, जॉन के कई ग्रंथ इस प्रश्न पर बात करते हैं। मुझे लगता है कि हम जो प्रश्न पूछना चाहते हैं वह यह है कि क्या वे सच्चे आस्तिक थे या नहीं? मैं आभारी हूँ कि जब मैं इस तरह के प्रश्नों के बारे में सोचता हूँ तो निर्णय लेना मेरे ऊपर निर्भर नहीं है। मुझे वह प्रश्न जानने की आवश्यकता नहीं है।

मुझे बस अपना हृदय ईश्वर और उन लोगों के प्रति रखना है जो मेरे और मेरे मंत्रालय के घेरे में आते हैं। मैं अपने विश्वास की कमज़ोरी और हमें विश्वास में बने रहने और यीशु का अनुसरण जारी रखने के लिए एक-दूसरे को प्रोत्साहित करने की ज़रूरत के बारे में ईमानदार और वास्तविक होने की कोशिश करता हूँ। इसलिए, मैं नहीं जानता कि कैसे वर्गीकृत किया जाए या भविष्यवाणी की जाए या वास्तव में यह जाना जाए कि ये लोग भगवान के सामने कहां खड़े हैं।

मुझे नहीं लगता कि जॉन चाहता है कि हम यह आवश्यक रूप से जानें। वह इसके बारे में और अधिक स्पष्ट होते। एक बात जो जॉन में स्पष्ट प्रतीत होती है वह यह है कि वह चाहता है कि लोग यीशु का अनुसरण करें और फलदायी और विश्वासयोग्य बनें और मसीह में बने रहें।

बहुत से लोग जो यीशु पर कुछ अर्थों में विश्वास करते थे, उन्होंने ऐसा नहीं किया। सबसे स्पष्ट रूप से जॉन अध्याय 8 में उस अध्याय के उत्तरार्ध में। तो हम इन सभी लोगों की व्याख्या कैसे करते हैं, मैं सिर्फ जॉन के साहित्य के संदर्भ में निश्चित नहीं हूँ।

हममें से अधिकांश, विश्वास में दृढ़ता के संदर्भ में ईश्वर की योजना के किसी न किसी प्रकार के व्यवस्थित धर्मशास्त्र के साथ जॉन के पास आते हैं। मैं आपसे बस यही कहूंगा, इस बारे में सोचें कि आपके चर्च में विश्वास में दृढ़ता और आस्तिक को सुरक्षित करने के बारे में आपको क्या सिखाया गया है और एक निष्कर्ष पर पहुंचें जो पाठ यहां जो कह रहा है उसके साथ न्याय करता है। मुझे लगता है कि पाठ हमें जो मुख्य बात बता रहा है, वह शायद हमें अध्याय 13 में सोचने पर मजबूर करती है जब यीशु शिष्यों से कहते हैं, तुम में से एक मुझे धोखा देगा।

इसलिए यह सोचने के बजाय कि हमारे पास अन्य लोगों के विश्वास को परखने और यह जानने की क्षमता है कि उनके साथ क्या हो रहा है, शायद हमें जॉन 13 के शिष्यों की तरह होना चाहिए, जब वे विश्वासघात का सामना करते थे तो अनिवार्य रूप से एक-दूसरे की ओर देखते थे और सोचते थे, क्या यह मैं हो सकता हूँ? इसलिए, मुझे लगता है कि समय-समय पर खुद से यही सवाल पूछना स्वस्थ है। क्या यह मैं हो सकता हूँ? इसलिए, हम यूहन्ना 12 को यह याद करके छोड़ देते हैं कि इस अध्याय में यीशु कहाँ थे क्योंकि उन्होंने इन यूनानियों की उपस्थिति के बारे में सोचा था जो आए थे और उन्हें देखना चाहते थे, शायद एक संकेत के रूप में कि उनका मंत्रालय समाप्त हो रहा था। और हमारे पास यहां एक पाठ है जो काफी हद तक हमें समदर्शी परंपरा, गेथसमेन के बगीचे की याद दिलाता है।

यीशु कहते हैं, क्या अब मेरा प्राण व्याकुल है? मैं क्या कहूँ? हे पिता, मुझे इस घड़ी से बचा लो। नहीं, इसी कारण से मैं इस घड़ी तक आया हूँ, इसलिए मैं ऐसा नहीं कह सकता। मुझे क्या कहना चाहिए? हे पिता, अपना नाम रोशन करो।

तो, इस बिंदु पर हमारे पास एक स्वर्गीय आवाज़ है जो यीशु द्वारा कही गई बातों की पुष्टि करती है। मैंने इसे महिमामंडित किया है और इसे फिर से महिमामंडित करूंगा। भीड़ द्वारा सुनी गई यीशु की प्रतिक्रिया की एक प्रकार की श्रव्य प्रकृति थी।

कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या वज्रपात के रूप में की। कुछ लोगों ने इसकी व्याख्या इस प्रकार की कि कोई देवदूत यीशु से बात कर रहा है। यदि यीशु यूहन्ना में हमारा उदाहरण है, जैसा कि यह स्पष्ट है कि वह सभी सुसमाचारों में है, और यदि उसने कहा, जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं तुम्हें भेजता हूँ, तो इसका संबंध केवल उसके द्वारा आत्मा को वितरित करने से कहीं अधिक था। शिष्यों, तो शायद मुझे लगता है कि आपको और मुझे यूहन्ना अध्याय 12, श्लोक 27 के शब्दों को दोहराने में सक्षम होना चाहिए।

क्या हमें ईश्वर से कहना चाहिए कि हम जिस भी कठिनाई का सामना कर रहे हैं, उससे हमें बचा ले? नहीं, हमें कहना चाहिए, हे पिता, अपने नाम की महिमा कर।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 14 है, यरूशलेम में आखिरी बार वापस, जॉन 12:1-50।